# भारत में धन शोधन (मनी लॉन्ड्रिंग) का मुद्दा

**प्रिलिम्स के लिये:** सर्वोच्च न्यायालय, मनी लॉन्ड्रिंग, मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम, 2002, प्रवर्तन निदेशालय, प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट

**मेन्स के लिये:** धन शोधन से निपटने के लिये भारत में कानूनी और नियामक ढाँचा, धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA), सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय और उसके निहितार्थ

स्रोत: TH

## चर्चा में क्यों?

**वित्त मंत्री द्वारा राज्यसभा** में प्रस्तुत एक रिपोर्ट से पता चलता है कि **प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने वर्ष 2015 से धन शोधन निवारण अधिनियम (PMLA), 2002 के तहत 5,892 मामले** उठाए हैं, लेकिन **केवल 15 मामलों में ही** दोषसिद्धि हो पाई है।

- इसके अलावा, एक अन्य घटनाक्रम में **सर्वोच्च न्यायालय** ने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय को **कानून के नियमों** का पालन करना चाहिये, PMLA मामलों के लिये **फास्ट-ट्रैक कोर्ट** का आग्रह किया, तथा क्रिप्टोकरेंसी पर प्रतिबंध लगाए बिना इसके दुरुपयोग को रोकने के लिये **विनियमन** का आह्वान किया।

## धन शोधन या 'मनी लॉन्ड्रिंग' क्या है?

- **परिचय:** यह एक प्रक्रिया है जिसमें **आपराधिक गतिविधियों (जैसे मादक पदार्थों की तस्करी, हथियारों का अवैध व्यापार, गबन आदि)** से प्राप्त अवैध धन को इस प्रकार छिपाया जाता है कि वह वैध प्रतीत हो, जिससे अपराधी बिना पकड़े अपने मुनाफे का उपयोग कर सकें।
  - इसमें धन के स्रोत, स्वरूप या स्थान को बदलना शामिल होता है ताकि जाँच से बचा जा सके।
- **3 प्रमुख चरण:** मनी लॉन्ड्रिंग में प्लेसमेंट (अवैध धन का परिचय), लेयरिंग (उनके मूल को छिपाना) और इंटीग्रेशन (उन्हें वैध दिखाना) शामिल हैं।
- **प्रमुख विधियाँ:** प्रमुख विधियों में **संरचना/स्मर्फिंग** (बड़ी नकदी को छोटे-छोटे भागों में विभाजित करना), **व्यापार आधारित लॉन्ड्रिंग**, **शेल कंपनियाँ** और **रियल एस्टेट निवेश** शामिल हैं।

## भारत में मनी लॉन्ड्रिंग के बढ़ते मामलों के प्रमुख कारण क्या हैं?

- **कानूनी और प्रवर्तन संबंधी कमियाँ: PMLA की धारा 5** (पंजीकृत अपराध के बिना संपत्ति कुर्की) का दुरुपयोग और अभियोजन में देरी से प्रभावशीलता कम हो जाती है।
- **जटिल मनी लॉन्ड्रिंग तकनीकें: डिजिटल मुद्राओं/क्रिप्टोकरेंसी, फिनटेक और सीमा-पार** तंत्रों का उपयोग, जिससे इनका पता लगाना कठिन हो जाता है।
  - ₹260 करोड़ के वैश्विक साइबर धोखाधड़ी मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने पाया कि धन को बिटकॉइन और USDT जैसी क्रिप्टोकरेंसी में बदलकर, हवाला **ऑपरेटरों और यूएई में व्यक्तियों के माध्यम से शोधन** किया गया।
- **शैडो इकॉनमी और नकद-आधारित क्षेत्र:** असंगठित क्षेत्र की उच्च मौजूदगी और रियल एस्टेट, ज्वेलरी तथा लक्ज़री गुड्स में विनियमन की कमी
- **कमज़ोर वैश्विक सहयोग: 85 से अधिक देशों के साथ दोहरे कराधान से बचाव के समझौतों (DTAA** ) के बावजूद, **सीमित सूचना साझाकरण** से जाँच में बाधा आती है।

## धन शोधन के प्रमुख परिणाम क्या हैं?

- **संगठित अपराध और आतंकवाद को बढ़ावा देना:** धन शोधन से प्राप्त धन **आपराधिक नेटवर्क**, **मादक पदार्थ/मानव तस्करी** और **आतंकवाद के वित्तपोषण को बढ़ावा** देता है।

- **जन विश्वास का क्षरण: भ्रष्टाचार** को प्रोत्साहित करता है और **लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमज़ोर** करता है।
- **संवेदनशील समूहों पर प्रभाव:** कल्याण के लिये निर्धारित सार्वजनिक धन का दुरुपयोग, **सामाजिक-आर्थिक असमानता को बढ़ाना।**
- **आर्थिक विकृति:** मौद्रिक नीति को अप्रभावी बनाती है, **पूंजी प्रवाह में अस्थिरता उत्पन्न करती है, अचल संपत्ति की कीमतों को बढ़ाती है, FDI को बाधित** करती है और **वित्तीय अस्थिरता का कारण** बनती है।

लॉन्ड्रोमैट

- "**लॉन्ड्रोमैट" बैंकिंग चैनलों**, **शेल फर्मों (आवरण कंपनियाँ)** और अवैध धन को साफ करने के लिये उपयोग किये जाने वाले **अपतटीय खातों** के एक जटिल जाल को संदर्भित करता है। यह शब्द अमेरिकी अपराध सिंडिकेट से उत्पन्न हुआ है जो लॉन्ड्रिंग के लिये लॉन्ड्रोमैट का उपयोग करते हैं।

## धन शोधन निवारण अधिनियम, 2002 (PMLA) क्या है?

- **परिचय: PMLA, 2002 (2005** में लागू) को **धन शोधन** को रोकने और ऐसी गतिविधियों से प्राप्त **संपत्ति को ज़ब्त करने के लिये** अधिनियमित किया गया था।
  - यह **मादक पदार्थों की तस्करी, स्मगलिंग और आतंकवाद के वित्तपोषण** जैसे अपराधों से संबंधी धन शोधन को लक्षित करता है।
  - अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरण करने के लिये संविधान के **अनुच्छेद 253** के तहत अधिनियमित।
- **PMLA के प्रमुख प्रावधान:**
  - **कुर्की, ज़ब्ती और परिसंपत्ति हरण**: यह अधिनियम अधिकारियों को अपराध से प्राप्त संपत्ति को **कुर्क करने, ज़ब्त करने और परिसंपत्ति हरण** का अधिकार देता है।
    - इन कार्यों की देख-रेख एक **न्यायनिर्णयन प्राधिकरण द्वारा की जाती है तथा इसके लिये अनुसूचित अपराध** (राज्य के विरुद्ध अपराध) का अस्तित्व आवश्यक होता है।
  - **कार्यवाही और ECIR की शुरुआत: ED** द्वारा दायर **ECIR (प्रवर्तन मामला सूचना रिपोर्ट)** के आधार पर कार्यवाही शुरू की जा सकती है और इसके लिये किसी **FIR** की **आवश्यकता नहीं है**।
    - ECIR PMLA के तहत जांच के लिये प्रारंभिक बिंदु के रूप में कार्य करता है।
    - **ED** को **PMLA, 2002 के तहत** विभिन्न **धाराओं (3, 4, 5, 16, 17 आदि)** से **धन शोधन से संबंधित अपराधों की जाँच, कुर्की, जब्ती और मुकदमा चलाने की शक्तियाँ प्राप्त हैं।**
  - **जमानत की शर्तें (धारा 45):** अभियुक्त को प्रथम दृष्टया अपनी बेगुनाही सिद्ध करनी होगी तथा जमानत प्राप्त करने के लिये न्यायालय को आश्वस्त करना होगा कि वह दोबारा अपराध नहीं करेगा।
  - **संस्थागत तंत्र**: **वित्तीय खुफिया इकाई (FIU-IND)** बैंकों और वित्तीय संस्थानों से संदिग्ध लेन-देन रिपोर्ट प्राप्त करती है और उनका विश्लेषण करती है।
    - अपीलीय **न्यायाधिकरण** न्यायनिर्णायक प्राधिकारी द्वारा पारित आदेशों के विरुद्ध अपीलों की सुनवाई करता है।
  - **PMLA से संबंधित हालिया संशोधन:** PMLA में **वर्ष 2019** में संशोधन कर **नियम 3A पेश किया गया**, जिससे **विशेष न्यायालयों को** आरोप तय होने के बाद **ज़ब्त संपत्ति** के लिये दावेदारों को सूचित करने की अनुमति प्राप्त हो गई।
    - **वर्ष 2023** के संशोधन ने **गैर सरकारी संगठनों** के लिये **प्रकटीकरण दायित्वों का विस्तार किया** और प्रमुख **विदेशी अधिकारियों को शामिल करने के लिये राजनीतिक रूप से उजागर व्यक्तियों (PEP) को फिर से परिभाषित किया, जो FATF** मानकों के अनुरूप है।
- **वैश्विक सहयोग:** भारत ने **85 से अधिक देशों** के साथ **निम्नलिखित के लिये DTAA पर हस्ताक्षर किये हैं**:
  - **वित्तीय और कर-संबंधी जानकारी के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाना**।
  - **अपतटीय खातों और निवेशों का पता लगाना संभव बनाना**।
  - **कर चोरी और अवैध धन हस्तांतरण को रोकना**।

## ईडी से संबंधित प्रमुख न्यायिक मामले

- **पी. चिदंबरम बनाम ईडी, 2019 मामला:** सर्वोच्च न्यायालय (SC) ने कहा कि धन के अवैध स्रोत को छिपाना वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करता है तथा राष्ट्र की संप्रभुता एवं अखंडता के लिये खतरा है।

- **वीरभद्र सिंह बनाम ईडी, 2017 मामला:** सर्वोच्च न्यायालय ने दोहराया कि **FIR की आवश्यकता नहीं** है, क्योंकि कार्यवाही शुरू करने के लिये ईसीआईआर (ECIR) पर्याप्त है।

- **विजय मदनलाल चौधरी बनाम भारत संघ, 2022 मामला:** सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि **अभियोजन (धारा 3)** के लिये **अनुसूचित अपराध का पंजीकरण** अनिवार्य है, लेकिन संपत्ति **जब्ती (धारा 5)** के लिये यह आवश्यक नहीं है।
  - यह प्रावधान अक्सर **असहमति जताने वाले व्यक्तियों या राजनीतिक विरोधियों** के खिलाफ दुरुपयोग किया जाता है।

## मनी लॉन्ड्रिंग की समस्या से निपटने हेतु उठाए जाने वाले कदम:

- **FATF मानकों का कड़ाई से पालन:** प्रवर्तन एजेंसियों को **फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF)** की सिफारिशों के अनुरूप कार्रवाई करनी चाहिये, जिससे **पारदर्शिता, जवाबदेही और दुरुपयोग** पर नियंत्रण सुनिश्चित हो।
- **स्वतंत्र एवं निष्पक्ष जाँच:** प्रवर्तन एजेंसियों को राजनीतिक पक्षपात से मुक्त होकर स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहिये, ताकि **वास्तविक मामलों को प्राथमिकता** दी जा सके तथा व्यक्तियों के अधिकार सुरक्षित रहें।
- **साक्ष्य जुटाना तथा समन्वय को सुदृढ़ करना:** वित्तीय खुफिया तंत्र को बेहतर बनाना, एजेंसियों (ED, FIU, आयकर विभाग) के बीच समन्वय बढ़ाना तथा डिजिटल फॉरेंसिक का उपयोग कर दोषसिद्धि दर में वृद्धि करना।
- **DTAA तंत्र का प्रभावी उपयोग:** अवैध वित्तीय प्रवाह का पता लगाने और संधियों में मौजूद खामियों को दूर करने के लिये विदेशी एजेंसियों के साथ डेटा एक्सचेंज प्रोटोकॉल और वास्तविक समय सहयोग को मज़बूत करना।
- **न्यायिक निगरानी और सुरक्षा उपाय:** मनमानी कार्रवाई को रोकने और कानून की उचित प्रक्रिया को बनाए रखने के लिये PMLA के तहत कुर्की और अभियोजन प्रक्रियाओं में अधिक न्यायिक जाँच सुनिश्चित करना।

## निष्कर्ष:

**मनी लॉन्ड्रिंग** भारत की वित्तीय स्थिरता और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये एक गंभीर खतरा है। यद्यपि पीएमएलए (PMLA) एक सशक्त कानूनी ढाँचा प्रदान करता है, लेकिन इसके क्रियान्वयन में देरी, दुरुपयोग और निम्न दोषसिद्धि दर जैसी खामियाँ हैं। इस समस्या से निपटने के लिये कानूनी सुधार, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग में वृद्धि और संस्थागत जवाबदेही को सुदृढ़ करना आवश्यक है।

**दृष्टि मेन्स प्रश्न:**

मनी लॉन्ड्रिंग से निपटने के लिये भारत के संस्थागत और कानूनी उपायों पर चर्चा कीजिये। प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं और आगे का रास्ता क्या है?

भारत में मनी लॉन्ड्रिंग से निपटने के लिये उठाए गए संस्थागत और कानूनी उपायों पर चर्चा कीजिये। इसकी प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं और आगे का मार्ग क्या हो सकता है?

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

**मेन्स**

प्रश्न 1. चर्चा कीजिये कि किस प्रकार उभरती प्रौद्योगिकियाँ और वैश्वीकरण मनी लॉन्ड्रिंग में योगदान करते हैं। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर मनी लॉन्ड्रिंग की समस्या से निपटने के लिये किये जाने वाले उपायों को विस्तार से समझाइये। (2021)

प्रश्न 2. अवैध धन स्थांतरण देश की आर्थिक प्रभुसत्ता के लिये एक गंभीर सुरक्षा जोखिम होता है। भारत के लिये इसका क्या महत्त्व है और इस खतरे से बचने के लिये क्या कदम उठाए जाने चाहियें? (2013)

प्रश्न 3.. संसार के दो सबसे बड़े अवैध अफीम उगाने वाले राज्यों से भारत की निकटता ने भारत की आंतरिक सुरक्षा चिंताओं को बढ़ा दिया है। नशीली दवाओं के अवैध व्यापार एवं बंदूक बेचने, गुपचुप धन विदेश भेजने और मानव तस्करी जैसी अवैध गतिविधियों के बीच कड़ियों को स्पष्ट कीजिये। इन गतिविधियों को रोकने के लिये क्या-क्या प्रतिरोधी उपाय किये जाने चाहिये? (2018)

---

# चलनिधि प्रबंधन ढाँचे के संबंध में RBI की अनुशंसाएँ

स्रोत: BS

## चर्चा में क्यों?

भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) के **आंतरिक कार्य समूह (IWG)** ने **चलनिधि प्रबंधन ढाँचे (Liquidity Management Framework - LMF)** की दक्षता और पूर्वानुमेयता में सुधार हेतु अपनी अनुशंसाएँ प्रस्तुत की हैं। यह ढाँचा फरवरी 2020 से कार्यान्वयन में है।

## RBI का चलनिधि प्रबंधन ढाँचा (LMF) क्या है?

- **परिचय:** LMF मूल रूप से वह उपकरण-संग्रह (toolkit) है, जिसका उपयोग RBI बैंकिंग प्रणाली में **उपलब्ध नकदी की मात्रा को नियंत्रित करने**, अल्पकालिक ब्याज दरों को दिशा देने और मौद्रिक नीति के प्रभावी क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिये करता है।
- **मुख्य तंत्र (Core Mechanism):** LMF का मूल आधार **चलनिधि समायोजन सुविधा (Liquidity Adjustment Facility - LAF)** है, जो रेपो और **रिवर्स रेपो** व्यवस्था के माध्यम से आवश्यकतानुसार चलनिधि को प्रवाहित (inject) या अवशोषित (absorb) करता है।
    - यह ढाँचा आमतौर पर **"कॉरिडोर प्रणाली"** पर आधारित होता है, जिसमें **नीतिगत रेपो दर** बीच में स्थित होती है। **रातोंरात भारित औसत कॉल दर (Weighted Average Call Rate - WACR)** मौद्रिक नीति का मुख्य परिचालन लक्ष्य होती है।
- **LMF के उपकरण:** इस ढाँचे में लंबी अवधि और संरचनात्मक चलनिधि समायोजन के लिये **खुले बाज़ार का परिचालन (OMO)**, **नकद आरक्षिति अनुपात (CRR)** और **सांविधिक चलनिधि अनुपात (SLR)** जैसे अन्य उपकरण भी शामिल हैं।

## RBI की अनुशंसाएँ: चलनिधि प्रबंधन ढाँचे (LMF) पर

- **परिचालन लक्ष्य के रूप में WACR को जारी रखना:** WG ने सुझाव दिया है कि रातोंरात WACR को मौद्रिक नीति का परिचालन लक्ष्य बनाए रखा जाए।
    - **कारण:** WACR का अन्य कोलैटरलयुक्त मनी मार्केट दरों के साथ उच्च सहसंबंध (correlation) पाया गया है।
        - यह मौद्रिक नीति संकेतों के प्रभावी संप्रेषण (transmission) हेतु एक विश्वसनीय माध्यम बना हुआ है।
- **14-दिन के VRR/VRRR नीलामी को समाप्त करना: 14-दिन के परिवर्ती दर रेपो (VRR)** और **परिवर्ती दर रिवर्स रेपो (VRRR)** नीलामियों को अस्थायी चलनिधि प्रबंधन के प्राथमिक साधन के रूप में समाप्त करने की सिफारिश की गई है।
    - इसके स्थान पर RBI को **7-दिन के रेपो/रिवर्स रेपो** और **रातोंरात से लेकर 14 दिन** तक की अवधि वाले अन्य ऑपरेशनों के माध्यम से अस्थायी चलनिधि का प्रबंधन करना चाहिये।
    - **कारण:** 14-दिन की VRR/VRRR नीलामियों में कम भागीदारी देखी गई है क्योंकि बैंक अल्पकालिक साधनों जैसे कि **स्थायी जमा सुविधा (SDF)** को प्राथमिकता देते हैं।.
        - अल्पकालिक परिचालन चलनिधि आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित करते हैं।
- **रेपो/रिवर्स रेपो संचालन के लिये पूर्व सूचना: RBI को रेपो या रिवर्स रेपो संचालन की कम से कम एक दिन पूर्व सूचना प्रदान करनी चाहिये।**
    - यदि आवश्यक हो, तो RBI वर्तमान चलनिधि स्थितियों के अनुसार उसी दिन भी संचालन कर सकता है।
    - **कारण:** पूर्व सूचना से बाज़ार में अनिश्चितता घटती है और मनी मार्केट दरें स्थिर बनी रहती हैं।
- **न्यूनतम CRR आवश्यकता:** RBI को 90% दैनिक न्यूनतम CRR बनाए रखने की आवश्यकता को जारी रखना चाहिये।
    - **कारण:** यह सुनिश्चित करता है कि बैंक पर्याप्त भंडार बनाए रखें, जिससे चलनिधि की कमी से बचा जा सके।

## RBI के LMF से संबंधित प्रमुख पद:

- **भारित औसत कॉल दर (Weighted Average Call Rate- WACR):** यह वह औसत ब्याज दर है जिस पर बैंक **कॉल मनी मार्केट** में **एक दिन (रात भर) के लिये एक-दूसरे से धन उधार लेते हैं और उधार देते हैं,** जो लेन-देन की मात्रा के आधार पर भारित होती है।
    - मौद्रिक नीति के लिये RBI का मुख्य परिचालन लक्ष्य अल्पकालिक ब्याज दरों का संकेत देना है।
- **परिवर्तनीय दर रेपो (VRR):** यह RBI की एक लिखित (Instrument) है जिसका उपयोग **अल्पकालिक चलनिधि प्रबंधन के लिये किया जाता है। स्थिर रेपो** के विपरीत**, जहाँ दर पूर्व-निर्धारित होती है,** VRR बाज़ार की माँग के आधार पर उधार दर निर्धारित करने के लिए नीलामी तंत्र का उपयोग करता है।
- **परिवर्तनीय दर रिवर्स रेपो (VRRR):** यह एक मौद्रिक नीति लिखित है जिसका उपयोग RBI द्वारा **नीलामी के माध्यम से अतिरिक्त चलनिधि को अवशोषित करने के लिये किया जाता है,** जहाँ बैंक RBI के पास **अल्पकालिक जमा रखने के लिये परिवर्तनीय ब्याज दरों पर बोली लगाते हैं** तथा बदले में ब्याज कमाते हैं।
    - नियत रिवर्स रेपो दर के विपरीत, VRRR दरें नीलामी प्रक्रिया के माध्यम से तय होती हैं, जिससे बाज़ार की शक्तियाँ दर निर्धारण में भूमिका निभा पाती हैं और RBI को अतिरिक्त चलनिधि को अधिक प्रभावी ढंग से अवशोषित करने में सहायता मिलती है।

# मौद्रिक नीति की मात्रात्मक लिखतें

# QUANTITATIVE INSTRUMENTS OF MONETARY POLICY

## चलनिधि समायोजन सुविधा ( LAF )

- **रेपो दर ( RR ):** वह दर जिस पर **भारतीय रिज़र्व बैंक वाणिज्यिक बैंकों को ऋण देता है।** यहाँ, RBI **प्रतिभूतियों की खरीद** करता है।
- **रिवर्स रेपो दर:** वह **दर जिस पर भारतीय रिज़र्व बैंक देश के भीतर वाणिज्यिक बैंकों से धन उधार लेता है।** रेपो दर के के विपरीत।
- यदि RBI **सख्त मौद्रिक नीति** का संकेत देना चाहता है, तो वह **रेपो दर में वृद्धि** करेगा; बैंक अपनी **उधारी दरों में वृद्धि** करेंगे।

## बैंक दर

- यह एक **दीर्घकालिक दर** है (रेपो दर अल्पकालिक है) जिस पर केंद्रीय बैंक अन्य बैंकों को धन उधार देता है।
- **बैंक दर में वृद्धि से ऋण/जमा पर ब्याज दरों में वृद्धि** होगी और इसी तरह इसमें कमी से ऋण/जमा पर ब्याज़ दरों में कटौती होगी।

## सांविधिक चलनिधि अनुपात ( SLR )

- SLR **जमाओं की न्यूनतम हिस्सेदारी** है जो वाणिज्यिक बैंकों को अभारित **सरकारी प्रतिभूतियों, नकदी एवं स्वर्ण जैसी सुरक्षित व चल आस्तियों में रखना होता है।**
- यदि RBI **मौद्रिक नीति को सख्त करना चाहता है, तो वह SLR में वृद्धि** करेगा।

## नकद आरक्षित अनुपात ( CRR )

- बैंकों को अपनी **जमा राशि का एक निश्चित हिस्सा RBI के पास नकदी के रूप में रखना आवश्यक** है।
- **CRR में वृद्धि के साथ ही बैंक ऋण की दरों में वृद्धि** कर देते हैं।

## खुला बाजार परिचालन (OMOs)

- इनमें बैंकिंग प्रणाली में **टिकाऊ चलनिधि को इंजेक्ट/अवशोषित करने के लिये** रिज़र्व बैंक द्वारा **सरकारी प्रतिभूतियों की एकमुश्त खरीद/बिक्री** शामिल है।

Drishti IAS

***[illegible] [illegible] [illegible]:***

***[illegible].*** तरलता प्रबंधन और मौद्रिक नीति के सुचारू संचरण को सुनिश्चित करने में तरलता समायोजन फ्रेमवर्क की भूमिका का मूल्यांकन कीजिये।

---

# भारत के रक्षा क्षेत्र का सशक्तीकरण

यह एडिटोरियल 07/08/2025 को बिज़नेस स्टैंडर्ड में प्रकाशित "As GPS Disruptions Grow, India Eyes Indigenous Quantum Navigation Boost," पर आधारित है। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि भारत रक्षा प्रौद्योगिकी में प्रगति तो कर रहा है, लेकिन लगातार चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिनका समाधान निरंतर निवेश, नवाचार एवं रणनीतिक सहयोग के माध्यम से किया जा सकता है।

**प्रिलिम्स के लिये:** ऑपरेशन सिंदूर, ब्रह्मोस मिसाइलें, iDEX योजना, रक्षा औद्योगिक गलियारे, रक्षा अंतरिक्ष एजेंसी, सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियाँ, INS विक्रांत, आत्मनिर्भर भारत, NETRA' UAV, ADITI योजना

**मेन्स के लिये:** भारत का रक्षा क्षेत्र: तकनीकी नवाचार, चुनौतियाँ और आगे की राह

भारत की रक्षा तकनीक में हो रही प्रगति उसकी सेना को और अधिक सक्षम, बुद्धिमान तथा त्वरित प्रतिक्रिया करने योग्य बना रही है। भारत 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत, अपनी क्षमताओं को मज़बूत करने के लिये AI, **रोबोटिक्स, साइबर युद्ध और उन्नत विनिर्माण में नवाचारों का लाभ** उठा रहा है। हालाँकि ये प्रयास आधुनिक सुरक्षा चुनौतियों का समाधान कर रहे हैं और प्रतिरोधक क्षमता को मज़बूत कर रहे हैं, फिर भी भारत को **विदेशी घटकों पर निर्भरता** तथा **निजी क्षेत्र के साथ मंद एकीकरण जैसी चुनौतियों का सामना** करना पड़ रहा है, जो **वैश्विक रक्षा क्षेत्र में अग्रणी बनने के उसके लक्ष्य में बाधा** बन रही हैं।

## भारत के रक्षा विकास को गति देने वाले प्रमुख तकनीकी नवाचार क्या हैं?

- **भारत की रक्षा क्षमताओं को मज़बूत करने के लिये AI का लाभ उठाना: भारत अपनी रक्षा क्षमताओं को मज़बूत करने, तीव्र और सटीक निर्णय लेने, मानवीय त्रुटियों को कम करने तथा उभरती सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने हेतु परिचालन दक्षता बढ़ाने के लिये AI के उपयोग को रणनीतिक रूप से आगे बढ़ा रहा है।**
  - वर्ष 2022 में, पहली बार आयोजित AI इन डिफेंस (AIDef) सिम्पोज़ियम के दौरान 75 नए AI उत्पाद/प्रौद्योगिकियाँ विकसित की गईं।
  - वर्ष 2024 में, रक्षा-संबद्ध उत्पादन विभाग ने **AI परियोजनाओं के लिये सालाना लगभग 12.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर निर्धारित** किये हैं।
    - रक्षा क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिये किया जा रहा है, जिनमें **AI-संचालित अवरोधन प्रबंधन, पूर्वानुमान आधारित अनुरक्षण प्रणाली, निर्णय बुद्धिमत्ता तथा लक्ष्य का अनुगमन एवं पहचान** शामिल हैं।
- **स्वायत्त प्रणालियों और रोबोटिक्स के साथ सैन्य प्रभुत्व को आगे बढ़ाना:** स्वायत्त रक्षा प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों का तेज़ी से विकास सैन्य प्रभुत्व का एक महत्त्वपूर्ण तत्व बनता जा रहा है।
  - भारतीय सशस्त्र बल सामरिक पर्यवेक्षण, युद्ध और रसद सहायता सहित विभिन्न भूमिकाओं के लिये मानव रहित हवाई वाहनों (UAV) को तेज़ी से शामिल कर रहे हैं।
  - रोबोटिक्स तकनीक भी बहुत ध्यान आकर्षित कर रही है, जिसमें **NETRA UAV जैसे नवाचार शामिल** हैं, जो निगरानी और सामरिक पर्यवेक्षण अभियानों के लिये डिज़ाइन किया गया एक स्वदेशी मानवरहित हवाई वाहन है।
    - इसके अतिरिक्त, DRDO का **रिमोट ऑपरेटेड वीहिकल (ROV), दक्ष, इम्प्रोवाइज़्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस (IED)** का पता लगाने और उनका प्रबंधन करने, परमाणु एवं रासायनिक संदूषण का सर्वेक्षण करने तथा खतरनाक सामग्रियों को निरस्त करने के लिये एक बहुउद्देशीय उपकरण के रूप में कार्य करता है।
- **साइबर सुरक्षा और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध के साथ रक्षा को सुदृढ़ करना:** साइबर सुरक्षा **और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध (EW)** विसंगतियों का पता लगाने, घुसपैठ का मुकाबला करने तथा वास्तविक काल में संचार प्रोटोकॉल को अनुकूलित करने के लिये आवश्यक हैं।
  - राष्ट्रीय तकनीकी अनुसंधान संगठन (NTRO) और रक्षा खुफिया एजेंसी (DIA) उन्नत तकनीकों में निवेश कर रहे हैं तथा विशेष साइबर रक्षा इकाइयाँ विकसित कर रहे हैं।
  - इलेक्ट्रॉनिक युद्ध नेटवर्क से जुड़े कमांड, नियंत्रण, संचार, कंप्यूटर, खुफिया जानकारी, निगरानी, सामरिक पर्यवेक्षण (C4ISR) एवं उन्नत सेंसर सिस्टम, जिनमें राफेल और तेजस विमानों के साथ ऑपरेशन सिंदूर में इस्तेमाल किये गए सेंसर सिस्टम भी शामिल हैं, **दुश्मन के संचार व रडार सिस्टम को बाधित करने की भारत की क्षमता** को बढ़ाते हैं।

        - इसके अतिरिक्त, **DRDO ने उन्नत इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली 'शक्ति' जैसी जैमिंग प्रणालियाँ विकसित की** हैं।
- **3D प्रिंटिंग से रक्षा निर्माण में क्रांति: भारत में, रक्षा निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण प्रगति एडिटिव मैन्युफैक्चरिंग है, विशेष रूप से** 3D प्रिंटिंग**, जो रक्षा उत्पादन में क्रांति ला रही है।**
    - 3D प्रिंटिंग को अपनाने से प्रोटोटाइपिंग और जटिल घटकों का त्वरित निर्माण संभव हो पाता है, जिससे मिसाइलों, UAV और सुरक्षात्मक उपकरणों जैसी **महत्त्वपूर्ण वस्तुओं के विकास की लागत एवं समय कम हो जाते हैं।**
        - इसके अतिरिक्त, **हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (HAL)** एवं **Wipro3D** ने **हवाई इंजनों के धातु के पुर्जों के 3D प्रिंटिंग के लिये साझेदारी** की है, जिससे भारत की रक्षा निर्माण क्षमताएँ और बढ़ेंगी।
- **स्वदेशी रक्षा उत्पादन में वृद्धि:** भारत ने **रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने** और **आयात पर निर्भरता कम करने में उल्लेखनीय प्रगति** की है, जिसका उदाहरण **सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियाँ** हैं।
    - इस प्रयास ने **राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक विकास दोनों में महत्त्वपूर्ण योगदान** दिया है।
    - वित्त वर्ष सत्र 2023-24 में, **भारत का स्वदेशी रक्षा उत्पादन ₹1.27 लाख करोड़** तक पहुँच गया, जो सत्र 2022-23 से 16.7% अधिक है।
        - इसके अलावा, अब **65% रक्षा उपकरण भारत में ही उत्पादित** होते हैं, जो **मेक इन इंडिया पहल की प्रभावशीलता** को दर्शाता है।
- **iDEX के माध्यम से रक्षा प्रौद्योगिकी में नवाचार को बढ़ावा:** iDEX पहल के अंतर्गत एक उप-योजना, '**iDEX के साथ नवीन प्रौद्योगिकी के विकास में तीव्रता**' **(ADITI) योजना,** महत्त्वपूर्ण और रणनीतिक प्रौद्योगिकियों के विकास को समर्थन देने के लिये तैयार की गई है। इसका लक्ष्य प्रगति की निगरानी के लिये एक **'प्रौद्योगिकी निगरानी उपकरण'** बनाना है।
    - iDEX के माध्यम से, कंपनियाँ **अगली पीढ़ी की तकनीकों के लिये उन्नत विनिर्माण तकनीकों एवं एल्गोरिदम का उपयोग** कर रही हैं, **स्वदेशी अनुसंधान और विकास (R&D) को बढ़ावा** दे रही हैं तथा **भारत की तकनीकी क्षमताओं को सुदृढ़** कर रही हैं।
- **क्वांटम तकनीकों के साथ रक्षा को मज़बूत करना:** वर्ष 2025 में, DRDO ने **क्वांटम संचार प्रणालियों** को विकसित करने के लिये **क्वांटम टेक्नोलॉजीज़ रिसर्च सेंटर (QTRC) की शुरुआत** की, जो **वितरण तकनीकों पर केंद्रित** है और जो क्वांटम युग के बाद **राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा के लिये अति-सुरक्षित संचार को सक्षम बनाती हैं।**
    - हाल ही में, IIT दिल्ली में DRDO के उद्योग-अकादमिक उत्कृष्टता केंद्र ने **1 किमी. से अधिक की दूरी पर मुक्त-स्थान क्वांटम सुरक्षित संचार का सफलतापूर्वक प्रदर्शन** किया।
        - इसके अतिरिक्त, निजी कंपनियों ने इन पहलों का समर्थन किया है, जिससे भारत अगली पीढ़ी की युद्ध तकनीकों में एक मज़बूत दावेदार के रूप में स्थापित हुआ है।
- **रक्षा औद्योगिक गलियारों (DIC) का विकास:** भारत ने **स्वदेशी रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देने** और **विदेशी निवेश आकर्षित करने** के लिये **उत्तर प्रदेश एवं तमिलनाडु में दो रक्षा औद्योगिक गलियारे स्थापित किये** हैं।
    - ये गलियारे **उद्योगों को महत्त्वपूर्ण बुनियादी अवसंरचना एवं प्रोत्साहन** प्रदान करते हैं, जिससे **रक्षा निर्माण के लिये अनुकूल वातावरण** बनता है।
    - इन **गलियारों में पहले ही ₹8,658 करोड़ से अधिक का निवेश** किया जा चुका है। इन गलियारों का लक्ष्य ₹53,439 करोड़ का संभावित निवेश आकर्षित करना है, जो इन्हें **भारत के रक्षा औद्योगिक विस्तार के लिये महत्त्वपूर्ण** बनाता है।
- **रणनीतिक रक्षा साझेदारी और वैश्विक कूटनीति:** एक वैश्विक रक्षा निर्यातक के रूप में भारत की बढ़ती भूमिका को **अमेरिका, फ्राँस और रूस जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारियों का समर्थन** प्राप्त है।
    - **इंडोनेशिया को ₹3,800 करोड़ मूल्य का BrahMos मिसाइल निर्यात सौदा मिसाइल प्रणालियों में भारत की तकनीकी दक्षता** को दर्शाता है।
    - इसके अतिरिक्त **जापान, फिलीपींस एवं मलेशिया जैसे देशों के साथ बहुपक्षीय रक्षा अभ्यासों में भारत की भागीदारी** वैश्विक सुरक्षा में एक भरोसेमंद भागीदार के रूप में इसकी स्थिति को और मज़बूत करती है।
- **महत्त्वपूर्ण रक्षा प्लेटफॉर्मों का स्वदेशीकरण:** भारत महत्त्वपूर्ण प्रणालियों के स्वदेशीकरण के माध्यम से **विदेशी सैन्य प्लेटफॉर्मों पर अपनी निर्भरता को काफी कम कर रहा है।**
    - एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि **INS विक्रांत** है, जो **भारत का पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत** है, जिसका वर्ष 2022 में जलावतरण हुआ। यह जहाज़, जिसमें कुल 76% स्वदेशी घटक है, **जटिल नौसैनिक प्लेटफॉर्मों के डिज़ाइन एवं निर्माण में भारत की क्षमता** को प्रदर्शित करता है।
    - इसके अलावा, भारतीय सेना द्वारा **T-90 भीष्म टैंक का नवीनीकरण**, अपने मौजूदा बेड़े के जीवन चक्र को बढ़ाने के लिये देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

## Achievements of India's Defence Sector

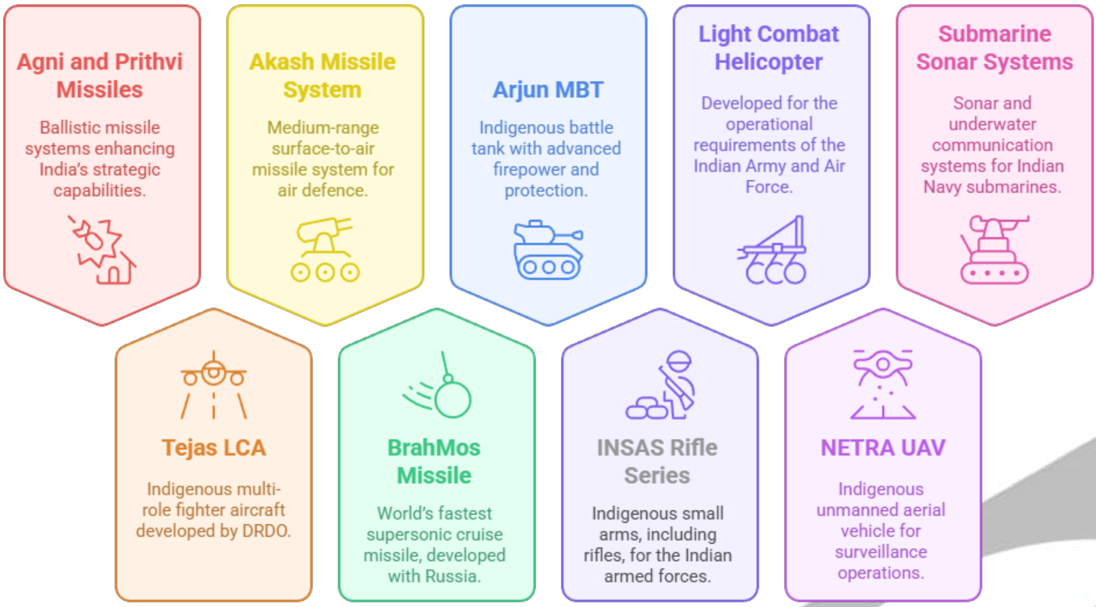


# भारत के रक्षा विकास और आत्मनिर्भरता में बाधा डालने वाली प्रमुख चुनौतियाँ क्या हैं?

- **पूर्ण रक्षा आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में कठिनाई:** [स्वदेशीकरण](#) **में प्रगति के बावजूद**, रक्षा खरीद चक्र अभी भी धीमा है और भारत को **उच्च-स्तरीय रक्षा प्रौद्योगिकियों के विकास में सीमाओं का सामना** करना पड़ रहा है।
  - वर्ष 2023 तक, **भारत के रक्षा खरीद बजट का 36% अभी भी आयात के लिये आवंटित** किया गया, जो तकनीकी क्षमताओं में अंतर को उजागर करता है।
    - **आत्मनिर्भरता सरकार का नारा** है, लेकिन जेट इंजन, रडार, मिसाइल सीकर एवं स्टील्थ तकनीक **अभी भी विदेशों से प्राप्त** की जाती हैं।
  - अपनी रक्षा आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये **पूर्ण घरेलू क्षमता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती** बनी हुई है।
- **साइबर सुरक्षा चुनौतियाँ और डिजिटल कमज़ोरियाँ:** भारत की साइबर और डिजिटल रक्षा क्षमताएँ अभी भी विकसित हो रही हैं, जिससे **उन्नत खतरों का मुकाबला करने की उसकी क्षमता सीमित** हो रही है।
  - साइबर सुरक्षा रणनीति एक **संक्रमणकालीन चरण में** है, जिसमें एक [सुसंगत रक्षा संरचना और एक साइबर आक्रामक रणनीति](#) का अभाव है, जो **मुख्य रूप से रक्षा पर केंद्रित** है।
    - साइबर सुरक्षा के बुनियादी अवसंरचनाओं में अपर्याप्त निवेश की समस्या है और नीतियों को विकसित होती तकनीकों तथा खतरों के अनुकूल होने के लिये निरंतर अद्यतन की आवश्यकता है।
    - 2024 की एक रिपोर्ट से पता चला है कि **पिछले वर्ष 92% भारतीय संगठनों ने साइबर सुरक्षा उल्लंघनों का अनुभव** किया।
  - इसके अतिरिक्त, **कौशल का अंतर** संगठनों की साइबर चुनौतियों का प्रभावी ढंग से प्रबंधन करने की क्षमता को सीमित करता है।
    - **भारतीय डेटा सुरक्षा परिषद (DSCI) के अनुसार**, उद्योग की बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिये **देश को लगभग 7,90,000 साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की आवश्यकता** है।
- **बजट की कमी और प्रशासनिक बाधाएँ:** भारत को रक्षा परियोजनाओं को **प्राथमिकता देने में बजटीय बाधाओं और चुनौतियों का सामना** करना पड़ रहा है, जिसके कारण महत्त्वपूर्ण बुनियादी अवसंरचनाओं एवं तकनीकी प्रगति की तैनाती में विलंब हो रहा है।
  - हालाँकि प्रगति हुई है, लेकिन **तकनीकी पारिस्थितिकी तंत्र अभी भी उतना मज़बूत नहीं** है जितना कि अधिक उन्नत रक्षा क्षेत्रों में है।
    - वित्तीय बाधाओं और भू-राजनीतिक कारणों से **भारत द्वारा रूस निर्मित [S-400 ट्रायम्फ](#) मिसाइल प्रणाली की खरीद में विलंब** हुआ है।
- **तकनीकी पिछड़ापन और क्षमता अंतराल:** भारत **अंतरिक्ष-आधारित लेज़र, जैमिंग-रोधी उपग्रह, या AI-संचालित SSA** जैसी अत्याधुनिक अंतरिक्ष-रोधी प्रणालियाँ विकसित करने में पिछड़ रहा है।
  - यह अंतर भारत की शत्रुओं को रोकने तथा अपने कक्षीय परिसंपत्तियों की सक्रिय रूप से रक्षा करने की क्षमता को घटाती है।
  - स्वदेशी अनुसंधान एवं विकास (R&D) समकक्ष प्रतिद्वंद्वियों की तुलना में **अपर्याप्त रूप से वित्तपोषित** है तथा **DRDO/ISRO** की रक्षा–नागरिक समन्वय क्षमता अभी विकसित हो रही है। विदेशी अवयवों पर निर्भरता **साइबर-भेद्यता** को भी बढ़ाती है।
  - इसरो का **वर्तमान वार्षिक बजट लगभग 1.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर** है, जो अन्य प्रमुख अंतरिक्ष एजेंसियों की तुलना में काफी कम है।
    - [नासा (NASA)](#) का बजट **25 अरब अमेरिकी डॉलर** से अधिक है, जबकि चीन की **सीएनएसए (CNSA)** को **18 अरब अमेरिकी डॉलर** से अधिक प्राप्त होते हैं।
- **रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र के विकास में बाधाएँ:** यद्यपि भारत के रक्षा क्षेत्र में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ी है, फिर भी इसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

- उदाहरण के लिये, **भारत फोर्ज, डेटा पैटर्न्स** और **MTAR टेक्नोलॉजी जैसी कंपनियाँ अब रक्षा निर्माण में अधिक प्रमुख भूमिका** निभा रही हैं।
- हालाँकि, इस प्रगति के बावजूद, सरकारी खरीद प्रक्रियाओं के साथ धीमा एकीकरण, नियामक चुनौतियाँ और उत्पादन क्षमता बढ़ाने में सीमाएँ बाधाएँ बनी हुई हैं।
    - **तमिलनाडु एवं उत्तर प्रदेश** में निजी निवेश आकर्षित करने के उद्देश्य से **रक्षा गलियारों की स्थापना, सशस्त्र बलों की बदलती आवश्यकताओं** और असंगत नीति कार्यान्वयन के कारण अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरी है।

- **सीमित निर्यात बाज़ार और वैश्विक प्रतिस्पर्द्धा:** रक्षा निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि के बावजूद, वैश्विक हथियार बाज़ार में भारत की हिस्सेदारी मामूली बनी हुई है।
    - वित्तीय वर्ष 2024-25 में, रक्षा निर्यात ₹23,622 करोड़ के रिकॉर्ड उच्च स्तर पर पहुँच गया, जिसमें निजी क्षेत्र का योगदान ₹15,233 करोड़ था।
        - हालाँकि, यह अभी भी वैश्विक हथियार व्यापार का एक छोटा-सा हिस्सा है, जहाँ **शीर्ष पाँच निर्यातक, अमेरिका, फ्राँस, रूस, चीन और जर्मनी, सामूहिक रूप से बाज़ार हिस्सेदारी का लगभग 72%** हिस्सा रखते हैं।
- **कार्यान्वयन एवं विश्वसनीयता संबंधी चिंताएँ:** भारत के रक्षा विनिर्माण कार्यान्वयन, विशेष रूप से समय सीमा को पूरा करने और निरंतर गुणवत्ता बनाए रखने की इसकी क्षमता ने संभावित खरीदारों के बीच **विश्वसनीयता संबंधी चिंताएँ** उत्पन्न की हैं।
    - अंतर्राष्ट्रीय खरीदारों के लिये समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने और विश्वसनीय बिक्री-पश्चात सहायता प्रदान करने की भारत की क्षमता के बारे में संदेह बना हुआ है।
        - भारत के **तेजस लड़ाकू विमानों एवं ब्रह्मोस मिसाइलों की बढ़ती मांग के बावजूद, सैन्य चुनौतियाँ एवं कूटनीतिक बाधाएँ** वैश्विक ग्राहकों को आकर्षित करने के देश के प्रयासों में बाधा बन रही हैं।
- **एकीकृत रक्षा रणनीति का अभाव:** भारत की रक्षा योजना अपने तीनों सशस्त्र बलों के बीच एकीकरण के अभाव से ग्रस्त है, जो अलग-अलग कार्य करते हैं।
    - चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) के **पद के सृजन के बावजूद, सेना, नौसेना और वायु सेना की रणनीतियों, संसाधनों एवं क्षमताओं में सामंजस्य स्थापित करने की चुनौतियाँ** बनी हुई हैं।
    - इन एकीकरण चुनौतियों का एक उल्लेखनीय उदाहरण एकीकृत थिएटर कमांड का विलंबित कार्यान्वयन है, जो सेनाओं के बीच एकजुटता बढ़ाने के उद्देश्य से एक प्रमुख सुधार है।

## भारत अपनी रक्षा क्षमताओं एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ाने के लिये क्या कदम उठा सकता है?

- **निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र की दिग्गज कंपनियों के बीच सहयोग को बढ़ावा: निजी कंपनियों में नवाचार करने की क्षमता है, लेकिन उन्हें HAL और BEL जैसी सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के साथ बेहतर एकीकरण की आवश्यकता है। सहयोगात्मक परियोजनाएँ उत्पादन क्षमताओं और तकनीकी प्रगति को बढ़ा सकती हैं।**
    - **नीतिगत सुधारों से निजी कंपनियों को स्वदेशी तकनीक विकसित करने** के साथ-साथ ड्रोन, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध प्रणाली और UAV जैसे विशिष्ट क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
        - रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकीय तंत्र में निजी क्षेत्र के निवेश को आकर्षित करने के लिये कर छूट, सब्सिडी एवं प्रोत्साहन प्रदान करना। इससे घरेलू उत्पादन बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने में सहायता प्राप्त हो सकती है।
- **भारत की रक्षा निर्यात क्षमता एवं वैश्विक विश्वसनीयता में वृद्धि:** भारत को अपने निष्पादन रिकॉर्ड में सुधार, समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने एवं बिक्री के बाद की मज़बूत सेवाएँ प्रदान करके एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्त्ता के रूप में अपनी प्रतिष्ठा को मज़बूत करने की आवश्यकता है।
    - **मज़बूत आपूर्ति शृंखलाएँ स्थापित करने** और निरंतरता प्रदर्शित करने से भारत एक अधिक आकर्षक रक्षा निर्यातक बन जाएगा।
        - रक्षा परियोजनाओं की निगरानी और यह सुनिश्चित करने के लिये स्वतंत्र निकाय स्थापित किये जा सकते हैं कि वे समय पर पूरी हों। नियमित प्रगति समीक्षा, परियोजना ऑडिट और स्पष्ट लक्ष्य बेहतर क्रियान्वयन सुनिश्चित करेंगे।
    - भारत उन **विशिष्ट बाज़ारों को लक्षित** कर सकता है जहाँ उसकी **रक्षा तकनीक उत्कृष्ट** है, जैसे कि तेजस लड़ाकू विमान, ब्रह्मोस मिसाइलें और **दक्षिण-पूर्व एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में वायु रक्षा प्रणालियाँ**।
        - भारत-अफ्रीका रक्षा वार्ता, **दक्षिण-पूर्व एशिया रक्षा वार्ता और अन्य मंचों में भागीदारी** नए बाज़ारों को बढ़ावा देने में सहायता प्रदान कर सकती है।
- **साझेदारी के माध्यम से तकनीकी कमियों को दूर करना:** विदेशी तकनीकों पर निर्भरता कम करने के लिये, भारत को स्वदेशी रक्षा अनुसंधान में निवेश बढ़ाना चाहिये।
    - जेट इंजन, रडार, मिसाइल सीकर और स्टील्थ तकनीक जैसी **महत्त्वपूर्ण तकनीकों का घरेलू स्तर पर विकास करने से** कमियाँ दूर होंगी और भारत विश्वसनीय रूप से आत्मनिर्भर होगा।
        - **जीई एविएशन और डसॉल्ट जैसी वैश्विक रक्षा निर्माताओं के साथ सहयोग** करने से भारत को अत्याधुनिक तकनीकों तक पहुँचने में सहायता प्राप्त हो सकती है, जिन्हें बाद में घरेलू रक्षा परियोजनाओं में एकीकृत किया जा सकता है।
        - भारत विदेशी कंपनियों के साथ और अधिक **संयुक्त उद्यमों में प्रवेश करके रक्षा विनिर्माण** को बढ़ा सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि **महत्त्वपूर्ण तकनीकों का हस्तांतरण और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलन** किया जाए।
- **'वैश्विक खरीद' की बजाय 'भारतीय खरीद' पर ध्यान केंद्रित करना:** भारत को घरेलू रक्षा विनिर्माण को मज़बूत करने के लिये **'भारतीय खरीद' नीतियों को प्राथमिकता** देनी चाहिये। रक्षा उत्पादन और निर्यात संवर्द्धन नीति (DPEPP) और **सकारात्मक स्वदेशीकरण सूची जैसे कार्यक्रम इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में कदम** हैं।
    - **तेजस जेट एवं आकाश मिसाइल** जैसी स्थानीय रक्षा प्रणालियों की ओर रुख करने से निजी कंपनियों को मदद मिलेगी और वैश्विक आपूर्तिकर्त्ताओं पर निर्भरता कम होगी, जिससे रणनीतिक स्वायत्तता में सुधार होगा।
        - **दीर्घकालिक अनुबंध एवं प्रोत्साहन** स्थानीय उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकते हैं।
- **दोहरे उपयोग वाले बुनियादी अवसंरचनाओं का सह-विकास:** ऐसे बुनियादी अवसंरचनाओं के सह-विकास को बढ़ावा देना जिससे सैन्य और नागरिक दोनों क्षेत्रों को लाभ हो।

- उदाहरण के लिये, **गुजरात में धोलेरा विशेष निवेश क्षेत्र (DSIR)** को एक एकीकृत स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है जिसमें रक्षा बुनियादी अवसंरचनाओं और वाणिज्यिक संचालन दोनों के लिये प्रावधान होंगे।
    - इस क्षेत्र का लक्ष्य विनिर्माण के लिये कुशल बुनियादी अवसंरचनाओं, औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देने, रोज़गार सृजन और **एक संतुलित वातावरण प्रदान करने वाला एक विश्व स्तरीय गंतव्य बनना** है।
- **व्यापक रक्षा कौशल विकास कार्यक्रम:** स्वदेशी रक्षा उत्पादन में निरंतर वृद्धि के लिये अत्यधिक कुशल कार्यबल का विकास महत्त्वपूर्ण है।
  - भारत को विशिष्ट रक्षा प्रशिक्षण संस्थान स्थापित करने चाहिये और कौशल विकास के लिये वैश्विक रक्षा निगमों के साथ सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिये।
  - एक समर्पित रक्षा प्रतिभा अकादमी, शीर्ष-स्तरीय शैक्षणिक संस्थानों के साथ साझेदारी में, रक्षा आवश्यकताओं के अनुरूप कुशल इंजीनियरों, तकनीशियनों तथा साइबर विशेषज्ञों की एक शृंखला तैयार कर सकती है।
    - ऐसी पहल उन्नत कौशल समूहों में अंतर को दूर करेंगी और अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं को बढ़ाएँगी।

## निष्कर्ष

भारत का रक्षा क्षेत्र एक महत्त्वपूर्ण मोड़ पर है, जहाँ प्रौद्योगिकी और स्वदेशी क्षमताओं में प्रगति इसके विकास को गति दे रहे हैं। यद्यपि चुनौतियाँ बनी हुई हैं, विशेष रूप से **एकीकरण, तकनीकी विकास और निर्यात प्रतिस्पर्द्धात्मकता में**, देश की अपनी रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र को मज़बूत करने की प्रतिबद्धता अटल है। **इन लक्ष्यों की सतत् प्राप्ति भारत को वैश्विक रक्षा मंच पर एक सशक्त शक्ति के रूप में स्थापित करेगी।**

***[illegible]***

भारत के रक्षा क्षेत्र को मज़बूत करने और उसकी वैश्विक रक्षा स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु चुनौतियों और प्रमुख पहलों का परीक्षण कीजिये।

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)

## ***[illegible]***

**प्रश्न 1. मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने सहित दूरस्थ क्षेत्रों में स्थानीय जन-समुदाय के उत्थान के लिये सेना द्वारा संचालित अभियान (ऑपरेशन) को क्या कहा जाता है? (2024)**

(a) ऑपरेशन संकल्प
(b) ऑपरेशन मैत्री
(c) ऑपरेशन सद्भावना
(d) ऑपरेशन मदद

**उत्तर: C**

---

## ***[illegible]***

**प्रश्न 1. "भारत में बढ़ते हुए सीमापारीय आतंकी हमले और अनेक सदस्य-राज्यों के आंतरिक मामलों में पाकिस्तान द्वारा बढ़ता हुआ हस्तक्षेप सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) के भविष्य के लिये सहायक नहीं हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिये। (2016)**

**प्रश्न 2. 'उग्र अनुसरण' एवं 'शल्यक प्रहार' पदों का प्रयोग प्रायः आतंकी हमलों के विरुद्ध सैन्य कार्यवाही के लिये किया जाता है। इस प्रकार की कार्यवाहियों के युद्धनीतिक प्रभाव की विवेचना कीजिये। (2016)**

---

## द्वितीय विश्व युद्ध और वैश्विक शक्ति में बदलाव

**प्रिलिम्स के लिये:** प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध, वर्साय की संधि, **ऑपरेशन बारब्रोसा, तुष्टिकरण की नीति, हिरोशिमा और नागासाकी, मार्शल योजना**

**मेन्स के लिये:** द्वितीय विश्व युद्ध के कारण और परिणाम, द्वितीय विश्व युद्ध में भारत की भूमिका, द्वितीय विश्व युद्ध के वैश्विक प्रभाव

स्रोत: IE

## चर्चा में क्यों?

6 अगस्त, 2025 को विश्व ने **हिरोशिमा पर अमेरिका के परमाणु बम हमले की 80वीं वर्षगाँठ** मनाई, जिसे प्रत्येक वर्ष **हिरोशिमा दिवस** के रूप में मनाया जाता है।

- **6 और 9 अगस्त 1945** को, अमेरिका ने हिरोशिमा पर "**लिटिल बॉय**" और नागासाकी पर "**फैट मैन**" परमाणु बम गिराए, जिससे हज़ारों लोग तुरंत मारे गए, भारी विनाश और दीर्घकालिक विकिरण प्रभाव हुआ और अंततः जापान को **द्वितीय विश्व युद्ध (WW-II)** में आत्मसमर्पण करना पड़ा।

## द्वितीय विश्व युद्ध (WW) क्या था?

- **परिचय: द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945)** अब तक का सबसे **घातक वैश्विक संघर्ष** था, जो **धुरी राष्ट्रों (जर्मनी, इटली, जापान) और मित्र राष्ट्रों (फ्राँस, ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियत संघ, चीन)** के बीच लड़ा गया।
  - इस युद्ध से **लगभग 10 करोड़ लोग** प्रभावित हुए, जिसमें लगभग **5 करोड़ लोगों की मौत** हुई, जो उस समय की **विश्व जनसंख्या का लगभग 3%** थी।

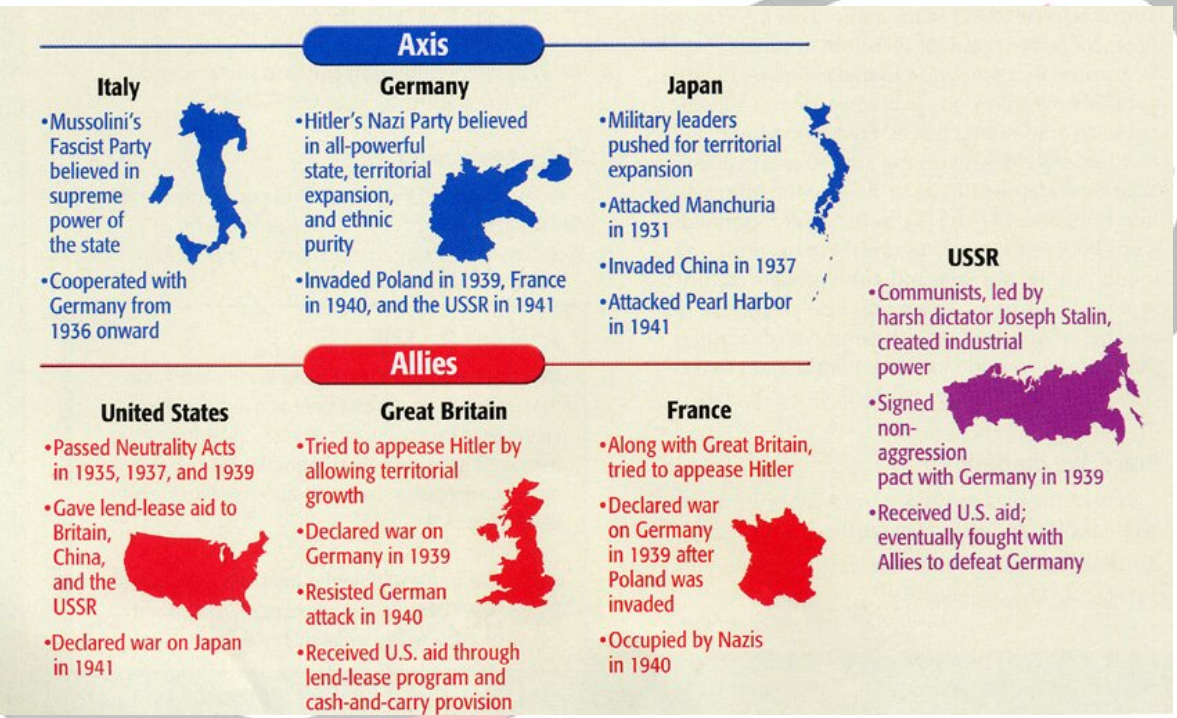


- **प्रमुख कारण:**
  - **वर्साय की संधि (1919):** प्रथम विश्व युद्ध के बाद इस संधि द्वारा **जर्मनी पर कठोर शर्तें लागू की गई,** जिनमें **युद्ध अपराध स्वीकार करना, भारी क्षतिपूर्ति देना, क्षेत्रीय हानि और कड़े सैन्य प्रतिबंध** शामिल थे। इन शर्तों ने जर्मनी को अपमानित किया, आक्रोश को जन्म दिया और अति-राष्ट्रवाद तथा प्रतिशोध की भावना को बढ़ावा दिया।
  - **राष्ट्र संघ की विफलता:** शांति बनाए रखने के लिये स्थापित, इस संघ में **सार्वभौमिक सदस्यता का अभाव था** (**अमेरिका कभी इसमें शामिल नहीं हुआ**) तथा इसकी कोई **स्थायी सेना नहीं थी, मंचूरिया (1931)** में **जापानी आक्रमण** और **अबीसीनिया (1935)** पर **इतालवी आक्रमण को** रोकने में इसकी विफलता ने फासीवादी शक्तियों को बढ़ावा दिया।
  - **आर्थिक संकट: महामंदी (1929 )** ने **विश्व में बेरोज़गारी, गरीबी और राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न की।** जर्मनी में, **अति मुद्रास्फीति और अमेरिकी ऋण वापसी** ने हालात और बिगाड़ दिये, जिससे **यूरोप** और **जापान में अधिनायकवाद और सैन्यीकरण** को बढ़ावा मिला।
  - **फासीवाद और नाजीवाद का उदय:** इटली में **मुसोलिनी** के नेतृत्व में फासीवाद ने **व्यवस्था, राष्ट्रवाद** और **साम्यवाद-विरोध** को बढ़ावा दिया।
    - हिटलर के अधीन **नाज़ीवाद ने फासीवाद को नस्लीय विचारधारा** के साथ जोड़ा, जिसका उद्देश्य **वर्साय की संधि को समाप्त** करना, **जर्मन शक्ति को पुनर्स्थापित** करना और ??????????? ("**जीवित स्थान**") प्राप्त करना था।
    - वर्ष 1933 से, हिटलर की तानाशाही ने **आक्रामक विस्तार और नस्लीय संहार** की नीतियाँ अपनाईं।
  - **तुष्टीकरण की नीति:** ब्रिटेन और फ्राँस ने हिटलर को **वर्ष 1936 में राइनलैंड पर पुनः कब्जा और 1938 में सूडेटनलैंड का**

**अधिग्रहण द्वारा वर्साय की संधि** का उल्लंघन करने दिया, उसकी महत्वाकांक्षाओं को कम आंका और सैन्य तैयारी में देर की, यहाँ तक कि **वर्ष 1939 में जर्मनी द्वारा** चेकोस्लोवाकिया पर आक्रमण करने के बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की।
- **पोलैंड पर आक्रमण (सितंबर 1939): जर्मनी के आक्रमण ने ब्रिटेन और फ्राँस** को युद्ध की घोषणा करने के लिये प्रेरित किया, जिससे **द्वितीय विश्व युद्ध की आधिकारिक** शुरुआत हुई और **तुष्टिकरण** की विफलता उजागर हुई।
- **जापानी विस्तार और पर्ल हार्बर (1941): जापान की साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षाओं के कारण पर्ल हार्बर** पर हमला हुआ, जिससे **अमेरिका** भी युद्ध में शामिल हो गया और द्वितीय विश्व युद्ध एक **वैश्विक संघर्ष** में बदल गया।

## द्वितीय विश्व युद्ध की प्रमुख घटनाएँ क्या थीं?

- **द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत और नाज़ी-सोवियत संधि (1939): जर्मनी ने सोवियत संघ के साथ देश** को विभाजित करने के लिये एक गुप्त समझौता करने के बाद **1 सितंबर, 1939** को पोलैंड पर आक्रमण किया, जिसके कारण **ब्रिटेन और फ्राँस** ने युद्ध की घोषणा की, जिससे आधिकारिक तौर पर **द्वितीय विश्व युद्ध** शुरुआत हुई।
- **फोनी वॉर और प्रारंभिक संघर्ष (1939-1940): फोनी वॉर के दौरान** पश्चिमी यूरोप में बहुत कम युद्ध हुए। इस बीच, **सोवियत संघ ने फिनलैंड (शीतकालीन युद्ध) के साथ युद्ध** किया, जो **मार्च 1940** में समाप्त हुआ तथा जर्मनी ने **डेनमार्क (आत्मसमर्पण) और नॉर्वे (जून तक प्रतिरोध)** पर आक्रमण किया।
- **फ्राँस का पतन और ब्लिट्जक्रेग (1940):** मित्र राष्ट्रों की संख्यात्मक श्रेष्ठता के बावजूद जर्मनी की तीव्र ब्लिट्जक्रेग रणनीति ने **फ्राँस, बेल्जियम और नीदरलैंड** को परास्त कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप फ्रांस की हार हुई और विची कठपुतली शासन की स्थापना हुई।
- **ब्रिटेन की लड़ाई (जुलाई–सितंबर 1940): रॉयल एयर** फोर्स ने **जर्मन [illegible]** के हवाई हमलों से सफलतापूर्वक ब्रिटेन की रक्षा की। यह नाज़ी जर्मनी की पहली बड़ी हार थी और ब्रिटेन पर आक्रमण की जर्मन योजना को रोक दिया गया।
- **ऑपरेशन बारबरोसा और अमेरिका का युद्ध में प्रवेश (1941):** जून 1941 में **जर्मनी ने सोवियत संघ पर आक्रमण कर नाजी-सोवियत संधि** तोड़ दी, लेकिन अत्यधिक सर्दी और सोवियत पलटवार के कारण उसकी प्रगति रुक गई। जापान के **पर्ल हार्बर पर हमले के बाद अमेरिका युद्ध** में शामिल हुआ और जर्मनी ने अमेरिका पर युद्ध की घोषणा की, जिससे **संघर्ष वैश्विक स्तर पर फैल** गया।
- **युद्ध की दिशा बदलना: (मिडवे, स्टेलिनग्राद और उत्तरी अफ्रीका (1942-1943):** अमेरिका ने **मिडवे की लड़ाई (जून 1942)** में जापान को निर्णायक रूप से पराजित किया।
  - स्टेलिनग्राद में सोवियत **विजय (फरवरी 1943)** जर्मनी की पहली बड़ी हार थी। **मित्र देशों की सेनाओं** ने उत्तरी अफ्रीका में जीत हासिल की और **यूरोप में धुरी राष्ट्रों की सेनाओं** को पीछे धकेलना शुरू कर दिया।

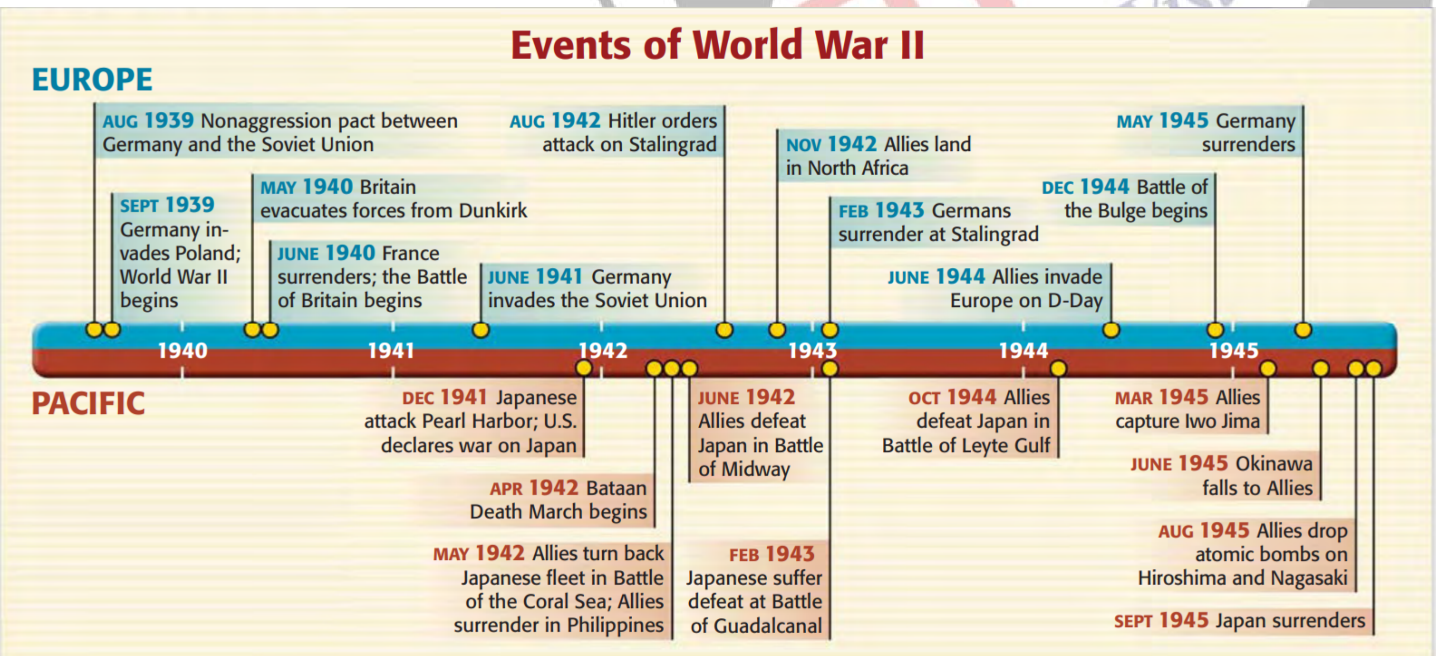


## द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख परिणाम क्या थे और भारत ने किस प्रकार प्रतिक्रिया की?

- **वैश्विक प्रभाव:**
  - **मानवीय क्षति:** द्वितीय विश्व युद्ध में अनुमानित **70-85 मिलियन लोगों की मृत्यु** हुई, जिसमें सैन्य और आम नागरिक दोनों शामिल थे। नाज़ी जर्मनी द्वारा होलोकॉस्ट में **छह मिलियन यहूदियों की नियोजित हत्या** की गई।
  - **शीत युद्ध का उदय:** मित्र देशों की जीत के साथ **नाज़ी जर्मनी और इंपीरियल जापान का पतन** हुआ। **जर्मनी को चार अधिग्रहित क्षेत्रों में विभाजित** किया गया, जबकि **सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप पर अपना प्रभुत्व बढ़ाया**। संयुक्त राज्य अमेरिका एक महाशक्ति के रूप में उभरा, जिसने **शीत युद्ध की शुरुआत** को चिह्नित किया।
  - **संयुक्त राष्ट्र की स्थापना: वर्ष 1945 में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना** की गई, जिसका उद्देश्य **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना तथा भविष्य के संघर्षों को रोकना** था।
  - **आर्थिक पुनरुत्थान:** संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा **वर्ष 1948 में शुरू की गई मार्शल योजना** ने युद्ध से अत्यधिक प्रभावित **पश्चिमी**

**यूरोप के पुनर्निर्माण के लिये आर्थिक सहायता** प्रदान की।

- **परमाणु हथियारों की दौड़:** हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमबारी ने **परमाणु युग की शुरुआत** की, जिसके परिणामस्वरूप शीत युद्ध के दौरान लंबे समय तक **परमाणु हथियारों की होड़** चली।
- **उपनिवेशवाद का अंत:** युद्ध ने **यूरोपीय औपनिवेशिक साम्राज्यों को कमज़ोर** किया, जिससे **अफ्रीका, एशिया और मध्य पूर्व में व्यापक उपनिवेश-विरोधी आंदोलनों को प्रेरणा** मिली, जो **अंततः उपनिवेशवाद के अंत का कारण** बना।

- **भारत पर प्रभाव:**
  - **आर्थिक कठिनाइयाँ:** द्वितीय विश्व युद्ध ने **भारत में आर्थिक कठिनाइयों में वृद्धि** की, जिसमें **मुद्रास्फीति, उच्च कर, भ्रष्टाचार और 1943 में बंगाल में भीषण अकाल** जैसी भयावह घटनाएँ शामिल थीं, जिनमें लाखों लोगों की मृत्यु हुई।
  - **राष्ट्रवादी भावनाओं में वृद्धि:** युद्ध ने **राष्ट्रवादी भावनाओं को और सशक्त** किया, विशेष रूप से सुभाष चंद्र बोस द्वारा **आज़ाद हिंद फौज़**/[भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA)]() के गठन के बाद, जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रतिरोध को और प्रेरित किया।
  - **युद्ध के बाद स्वतंत्रता आंदोलन:** युद्ध ने **ब्रिटिश नियंत्रण को कमज़ोर** किया, जिससे उनका शासन जारी रखना असंभव हो गया। यूरोपीय लोगों की तुलना में **सीमित नागरिक स्वतंत्रता** के अनुभवों ने **सैनिकों में स्वतंत्रता की मांग** को और बढ़ाया, जिसके **परिणामस्वरूप 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई**।

## द्वितीय विश्वयुद्ध पर भारत की प्रतिक्रिया क्या थी?

- **औपनिवेशिक स्थिति और एकतरफा युद्ध की घोषणा:** द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश था। **वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो** ने **भारतीय नेताओं से परामर्श किये बिना भारत के युद्ध में शामिल होने की घोषणा** की, जिससे व्यापक राजनीतिक असंतोष पैदा हुआ।
- **विशाल सैन्य योगदान: भारत ने 2.5 मिलियन से अधिक सैनिकों का योगदान दिया**, जो विश्व स्तर पर सबसे बड़ी स्वयंसेवी सेना थी। भारतीय सैनिकों ने **यूरोप, अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण-पूर्व एशिया** में प्रमुख युद्धक्षेत्रों में लड़ाई लड़ी, जिसमें **इटली के मॉन्टे कैसिनो की लड़ाई** जैसे महत्त्वपूर्ण युद्धों में मित्र देशों के युद्ध प्रयासों का समर्थन किया।
- **INA और धुरी-राष्ट्रों के साथ सहयोग: जापान के समर्थन के साथ भारतीय राष्ट्रीय सेना (INA) का गठन** किया गया, जिसने दक्षिण-पूर्व एशिया में धुरी राष्ट्रों के साथ मिलकर **ब्रिटिश शासन को समाप्त करने** और **भारत की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने** के लिये लड़ाई लड़ी।
- **INC का विरोध:** भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस (INC) ने **वर्ष 1939 में प्रांतीय सरकारों से इस्तीफा देकर ब्रिटिश एकतरफा निर्णय का सख्त विरोध** किया। उन्होंने मांग की कि **युद्ध के बाद भारत का राजनीतिक भविष्य भारतीयों द्वारा तय किया जाए** और द्वितीय विश्व युद्ध को स्वतंत्रता के लिये दबाव बनाने के अवसर के रूप में देखा।
- **पूर्ण और सशर्त समर्थन:** कुछ समूहों, जैसे- **मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा, ने ब्रिटिश युद्ध प्रयासों को सशर्त समर्थन दिया**, यह आशा करते हुए कि **भारत का योगदान उदारता का प्रतीक** है एवं अंततः स्वशासन के रूप में परिणत होगा। वहीं, महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने युद्ध की परिस्थितियों का उपयोग स्वतंत्रता आंदोलन को सशक्त करने के लिये किया।

**दृष्टि मेन्स प्रश्न:**

द्वितीय विश्व युद्ध की शुरुआत के प्रमुख कारण क्या थे और इसका वैश्विक प्रभाव क्या था? इस घटना ने भारत के राजनीतिक परिदृश्य को कैसे आकार दिया?

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

***??????:***

**प्रश्न. यह कहना कहाँ तक उचित है कि प्रथम विश्वयुद्ध मूलतः शक्ति-संतुलन को बनाए रखने के लिये लड़ा गया था? (2024)**

**प्रश्न. किस सीमा तक जर्मनी को दो विश्व युद्धों का कारण बनने का ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है ? समालोचनात्मक चर्चा कीजिये। (2015)**

---

## स्वदेशी आंदोलन और आत्मनिर्भर भारत

**प्रिलिम्स के लिये: [स्वदेशी आंदोलन,]() [राष्ट्रीय हथकरघा दिवस](), बंगाल विभाजन, आत्मनिर्भर भारत अभियान, मेक इन इंडिया**

मेन्स के लिये: भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वदेशी आंदोलन का महत्त्व और प्रभाव, भारत की आर्थिक नीतियों में स्वदेशी आदर्शों की प्रासंगिकता[मेक इन इंडिया]()

[स्रोत: पी.आई.बी](#)

## चर्चा में क्यों?

प्रतिवर्ष **7 अगस्त** को भारत में राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाया जाता है, जो वर्ष **1905 में इसी दिन शुरू हुए** स्वदेशी आंदोलन की याद में मनाया जाता है।

- इस आंदोलन ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रतिरोध के साधन के रूप में हथकरघा बुनाई पर विशेष ध्यान देते हुए स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा दिया।

## राष्ट्रीय हथकरघा दिवस

- हथकरघा समुदाय और उनके योगदान को सम्मानित करने के लिये भारत सरकार द्वारा **वर्ष 2015** में इस दिवस को आधिकारिक तौर पर घोषित किया गया था।
- इसमें हथकरघा को ग्रामीण अर्थव्यवस्था, महिला सशक्तीकरण और सतत्, पर्यावरण अनुकूल उत्पादन के एक स्तंभ के रूप में रेखांकित किया गया है।
- **राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 2025 का विषय: "परंपरा में नवाचार को बुनना (Weaving Innovation into Tradition)।"**

## स्वदेशी आंदोलन क्या था?

- **स्वदेशी आंदोलन की उत्पत्ति:**
  - **बंगाल का विभाजन: बंगाल का विभाजन (1905)** मुस्लिम बहुल पूर्वी बंगाल और हिंदू बहुल पश्चिम बंगाल में, धार्मिक और राजनीतिक विभाजन पैदा करने तथा राष्ट्रवादी एकता को कमज़ोर करने की ब्रिटिश रणनीति के रूप में देखा गया।
  - **लॉर्ड करज़न की नीतियाँ:** लॉर्ड करज़न की दमनकारी नीतियों, जैसे कलकत्ता निगम में सुधार और **भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (1904)**, ने मध्यम वर्ग के गुस्से तथा असंतोष को बढ़ावा दिया।
  - **कलकत्ता टाउनहॉल बैठक:** अगस्त **1905 में कलकत्ता टाउनहॉल** बैठक ने स्वदेशी आंदोलन की औपचारिक शुरुआत की, जिसमें लोगों से ब्रिटिश वस्तुओं, विशेष रूप से 'मैनचेस्टर निर्मित कपड़े' और **'लिवरपूल नमक' का बहिष्कार करने और भारतीय निर्मित उत्पादों का समर्थन** करने का आग्रह किया गया।
- **स्वदेशी आंदोलन के प्रमुख तरीके:**
  - **ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार:** स्थानीय उद्योगों और शिल्पों का समर्थन करके आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने हेतु भारतीय जनता को ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा **स्वदेशी (घरेलू) उत्पादों** को बढ़ावा देने के लिये प्रोत्साहित किया गया।
  - **राष्ट्रीय शिक्षा:** ब्रिटिश स्कूलों के बहिष्कार के परिणामस्वरूप भारतीय मूल्यों पर केंद्रित राष्ट्रीय स्कूलों की स्थापना हुई।
    - **वर्ष 1905 के कार्लाइल सर्कुलर** में प्रदर्शनकारी छात्रों से छात्रवृत्ति वापस लेने की धमकी दी गई, जिसके कारण कई छात्रों को ब्रिटिश संस्थान छोड़ना पड़ा।
    - वर्ष 1906 में **राष्ट्रीय शिक्षा परिषद्** का गठन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप बाद में **बंगाल नेशनल कॉलेज और बंगाल तकनीकी संस्थान** की स्थापना हुई।
  - **समितियों का गठन:** स्वदेशी संदेश के प्रचार के लिये विभिन्न स्वयंसेवी संगठन, जिन्हें समितियाँ कहा जाता है, का गठन किया गया।
    - बारिसल में **अश्विनी कुमार दत्ता** के नेतृत्व में **स्वदेश बंधु समिति जन-आंदोलन** का एक शक्तिशाली साधन बन गयी।
  - **पारंपरिक लोकप्रिय त्योहारों और मेलों का उपयोग:** गणपति और शिवाजी जैसे त्योहारों का उपयोग बंगाल सहित पूरे भारत में स्वदेशी संदेश फैलाने के लिये किया गया।
    - रवींद्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1905 के बंगाल विभाजन का विरोध करने के लिये **रक्षाबंधन** को एकता के प्रतीक के रूप में प्रयोग किया।
  - **आत्मनिर्भरता पर बल:** इस आंदोलन ने **'आत्म शक्ति' (स्वबल)** को बढ़ावा दिया, राष्ट्रीय गरिमा को जाति उत्पीड़न, बाल विवाह, दहेज और शराब के दुरुपयोग से लड़ने जैसे सामाजिक सुधारों के साथ जोड़ा गया।
- **स्वदेशी आंदोलन के चरण:**
  - **उदारवादी चरण:** आंदोलन की प्रारंभिक अवस्था में **उदारवादियों** ने **याचिकाएँ देने** और **सभाएँ आयोजित करने** जैसे शांतिपूर्ण तरीकों को अपनाया, लेकिन जब इन प्रयासों से अपेक्षित सफलता नहीं मिली, तो आंदोलन ने **उग्र और प्रतिरोधात्मक उपायों** का रूप ले लिया।
    - **सुरेंद्रनाथ बनर्जी** जैसे नेताओं ने आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के साधन के रूप में इस आंदोलन का समर्थन किया।
  - **उग्रवादी चरण: लाल-बाल-पाल** त्रिमूर्ति में शामिल बिपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय और बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने अंग्रेज़ों के साथ सीधे टकराव का समर्थन किया।
    - उन्होंने आंदोलन को **स्वराज (स्वशासन)** की मांग तक विस्तार दिया और **ब्रिटिश वस्तुओं, संस्थाओं और सेवाओं के बहिष्कार** का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने **निष्क्रिय प्रतिरोध** और **सशस्त्र संघर्ष** दोनों का समर्थन किया।

# भारत में स्वदेशी आंदोलन की समकालीन प्रासंगिकता क्या है?

- **आत्मनिर्भर भारत:** स्वदेशी आंदोलन के आदर्शों को आत्मनिर्भर भारत (आत्मनिर्भर भारत अभियान) मिशन के माध्यम से पुनर्जीवित किया गया है जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर भारतीय वस्तुओं को बढ़ावा देना और आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है।
- **महामारी के दौरान 20 लाख करोड़ रुपए (जीडीपी का ~ 10%) के प्रोत्साहन के साथ शुरू की गई यह योजना 'लोकल फॉर ग्लोबल' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसे विषयों पर केंद्रित है।**
- प्रमुख लक्ष्यों में भारत को वैश्विक आपूर्ति शृंखला केंद्र बनाना, निजी क्षेत्र का विश्वास बढ़ाना, भारतीय निर्माताओं को समर्थन देना तथा कृषि, वस्त्र, परिधान, आभूषण, फार्मा और रक्षा क्षेत्र में निर्यात का विस्तार करना शामिल है।
- **मेक इन इंडिया पहल:** यह भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में बढ़ावा देता है, स्थानीय और विदेशी कंपनियों को घरेलू स्तर पर उत्पादन करने के लिये प्रोत्साहित करता है, जो स्वदेशी आंदोलन के आत्मनिर्भरता और स्थानीय उद्योग पर ध्यान केंद्रित करने की भावना को प्रतिध्वनित करता है।
  - **मेक इन इंडिया** से कारोबार करने में आसानी हुई है, जिससे FDI 2015 के **45 बिलियन अमेरिकी डॉलर** से बढ़कर वित्त वर्ष 2024-25 में **81.04 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया है।
  - **वर्ष 2024** में निर्यात **437 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया, जिसमें **फार्मास्यूटिकल्स विश्व के 60% टीकों** की आपूर्ति करता है।
  - रक्षा निर्यात में वृद्धि हुई और **भारत 2024 के वैश्विक नवाचार सूचकांक में 39वें स्थान पर** पहुँच गया।
  - रूसी सेना के उपकरणों में '**मेड इन बिहार**' जूते शामिल किये गये हैं।
  - उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाओं का उद्देश्य 14 प्रमुख क्षेत्रों को कवर करके घरेलू विनिर्माण को बढ़ाना एवं निर्यात को बढ़ावा देना है।
- **खादी और कुटीर उद्योगों का पुनरुद्धार:** खादी आंदोलन, एक सामाजिक-सांस्कृतिक आख्यान, जिसे गांधीजी ने शुरू किया था, **स्वदेशी उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दिया और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार** का आग्रह किया, आज भी प्रासंगिक है, KVIC (खादी और ग्रामोद्योग आयोग) ने कारोबार में **उल्लेखनीय वृद्धि** हासिल की है।
  - **पिछले 11 वर्षों (2013–2025)** में, **खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) का उत्पादन 347% और बिक्री 447%** बढ़ी। रोज़गार में 49.23% की वृद्धि हुई, जिससे **1.94 करोड़ लोगों** को रोजगार मिला।
- **आर्थिक राष्ट्रवाद और संरक्षणवाद:** स्वदेशी आंदोलन में निहित यह नीति घरेलू उद्योगों को प्राथमिकता देती है, जिसके तहत आयात प्रतिस्थापन, व्यापार शुल्क, और भारतीय कंपनियों के लिये प्रोत्साहन दिये जाते हैं।
  - इन नीतियों का उद्देश्य विशेष रूप से **रक्षा, स्वास्थ्य सेवा और ऊर्जा** जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं पर निर्भरता कम करना है।

# भारतीय अर्थव्यवस्था में हथकरघा क्षेत्र की भूमिका

- **आर्थिक महत्त्व**: हथकरघा क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा **कुटीर उद्योग है, जिसमें 35 लाख से अधिक** श्रमिक कार्यरत हैं, जिनमें से अधिकांश महिलाएँ हैं।
  - **72%** हथकरघा बुनकर महिलाएँ हैं, जो उन्हें **आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान** करती हैं।
- **सतत् जीवन**: हथकरघा उत्पाद **पर्यावरण अनुकूल हैं, ग्रामीण आजीविका को समर्थन देते हैं तथा महिलाओं को सशक्त बनाते हैं और** साथ ही भारत की सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित रखते हैं।
- **निर्यात**: भारत विश्व में हाथ से बुने कपड़े का **सबसे बड़ा उत्पादक है,** जो वैश्विक हथकरघा उत्पादन का **95%** हिस्सा है।
  - भारत के प्रमुख हथकरघा निर्यातों में **चटाई (mats), कालीन (carpets), गलीचे (rugs), चादरें (bedsheets), कुशन कवर और सिल्क स्कार्फ शामिल हैं।**
  - **भारत ने वित्त वर्ष 23 में लगभग 10.94 अरब** अमेरिकी डॉलर मूल्य के हथकरघा सूती धागे, कपड़े और मेड-अप का निर्यात किया। वित्त वर्ष 24 में, निर्यात 20 से ज़्यादा देशों को हुआ, जिसमें **अमेरिका सबसे बड़ा आयातक था,** उसके बाद संयुक्त अरब अमीरात, स्पेन, ब्रिटेन, फ्राँस और इटली का स्थान था।

### हथकरघा संबंधी भारत की पहल

- **राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (National Handloom Development Programme- NHDP):** कच्चा माल, डिज़ाइन समर्थन, प्रौद्योगिकी उन्नयन, विपणन सहायता और शहरी हाट जैसी बुनियादी संरचना प्रदान करके सतत् विकास को बढ़ावा देता है।
- **कच्चा माल आपूर्ति योजना (Raw Material Supply Scheme- RMSS):** यह सब्सिडी दरों पर गुणवत्तापूर्ण धागा सुनिश्चित करती है, माल ढुलाई शुल्क की प्रतिपूर्ति करती है तथा हथकरघा बुनकरों को पावर-लूम के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने में सहायता करने के लिये 15% धागा सब्सिडी प्रदान करती है।
  - **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (PMMY)**: बुनकरों को कम ब्याज पर ऋण प्रदान करती है।
- **वर्कशेड योजना:** बुनकरों के घर के पास पूरे परिवार के लिये समर्पित कार्यस्थल उपलब्ध कराती है। प्रत्येक इकाई की लागत 1.2 लाख रुपए है। हाशिये पर रह रहे बुनकरों को 100% वित्तीय सहायता और अन्य को 75% सहायता मिलती है।
- **पारंपरिक डिज़ाइनों का संरक्षण:** भौगोलिक संकेत (GI) अधिनियम, 1999 के तहत कुल 104 हथकरघा उत्पादों को जीआई के लिये पंजीकृत किया गया है।
- **GeM:** लगभग 1.8 लाख बुनकर सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) से जुड़े।
- **कल्याणकारी उपाय: प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (PMJJY),** प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY) **और** एकीकृत **महात्मा गांधी बुनकर बीमा योजना (MGBBY)** के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाती है।

**[illegible]:**

**प्रश्न:** भारत की वर्तमान आर्थिक रणनीतियों में स्वदेशी आंदोलन के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता क्या है?

## UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न (PYQs)

### [illegible]

**प्रश्न. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2023)**

**कथन-1:** 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में घोषित किया गया है।

**कथन-II:** 1905 में, इसी दिन स्वदेशी आंदोलन शुरू किया गया था।

**उपर्युक्त कथनों के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?**

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है
(b) कथन- I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है
(c) कथन- I सही है किन्तु कथन-II गलत है
(d) कथन- I गलत है किन्तु कथन-II सही है

**उत्तर: (a)**

---

**प्रश्न. स्वदेशी आंदोलन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:**

1. इसने देशी शिल्पकारों के कौशल तथा उद्योगों को पुनर्जीवित करने में योगदान किया।
2. स्वदेशी आंदोलन के एक अवयव के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् की स्थापना हुई थी।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

**उत्तर: (c)**

---

### [illegible]

**प्रश्न.** लॉर्ड कर्जन की नीतियों एवं राष्ट्रीय आंदोलन पर उनके दूरगामी प्रभावों का मूल्यांकन कीजिये। (2020)

---

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/current-affairs-news-analysis-editorials/news-analysis/09-08-2025/print